

मराठी साहित्य का यात्रा वर्णन : उद्भव और विकास (सन 1940 से 2020 तक)

डॉ. दिलीपकुमार रा. गुंजरगे

हिंदी विभाग,

जयक्रांती कला वरिष्ठ महाविद्यालय, लातूर

E-mail id — drgunjarge1@gmail.com

सारांश

प्रस्तुत लेख में सन 1940 से 2020 तक मराठी साहित्य में यात्रा-वृत्तांत के विकास का क्रमिक अध्ययन किया गया है। चौथे युग (1940—1965) में प्रा. अनंत काणेकर, काका कालेलकर, रा. भि. जोशी, गंगाधर गाडगील, पु. ल. देशपांडे, प्रभाकर पाध्ये आदि साहित्यकारों ने देश-विदेश के प्रवास अनुभवों को कलात्मक शैली में प्रस्तुत किया। पंचम युग (1966—1980) में पु. ल. देशपांडे, माधव गडकरी, वसंत बापट, इंदुमती शेवडे, दिलीप चित्रे, रविंद्र केलकर आदि ने विविध सांस्कृतिक, भौगोलिक व सामाजिक अनुभवों को यात्रा-वर्णन में स्थान दिया। षष्ठम युग (1980—वर्तमान) में परिवहन व संचार साधनों की प्रगति के कारण यात्रा-वृत्तांत अधिक व्यापक व विविधतापूर्ण हुए। शंकरराव पोतदार, मंगला नारळीकर, शिरीष कणेकर, मीना प्रभू, ज्योती महंत, नंदिनी देशपांडे आदि लेखकों ने जगभरातील प्रवास अनुभव साहित्यिक रूप में मांडले। लेख में यह स्पष्ट किया गया है कि यात्रा-वृत्तांत मराठी साहित्य का एक महत्वपूर्ण अंग है, जो मानव की जिज्ञासा, साहस, और सांस्कृतिक संवेदनशीलता को प्रतिबिंबित करता है।

1. चौथा युग (सन 1940 ते सन 1965 तक)

स

न 1940 के बाद यात्रा-वृत्तांत साहित्य के दृष्टि से महत्वपूर्ण काल माना जाता है। इस काल में यात्रा-वृत्तांत निर्माण के दृष्टि से बहुत लिखे गए। साहित्य के दृष्टि से इस काल यात्रा-वृत्तांत कलात्मकता की उँचाई कि मिशाल प्रस्तुत करते हैं। इसकाल में अनेक महत्वपूर्ण साहित्यकारों ने यात्रा-वृत्तांत लिखे हैं। कुछ प्रतिनिधिक स्वरूप में यात्रा-वृत्तांत को निम्न रूप से देखा जा सकता है।

प्रा. अनंत काणेकर द्वारा 'धुक्यातून लाल ता-याकडे' (सन 1940), 'आमची माती आमचे आकाश' (सन 1950), 'निळे डोंगर तांबडी माती' (सन 1957) 'सोनेरी उन्हात पाचूची बेटे' (सन 1959), 'रक्ताची फुले' (सन 1959), 'खडक कोरतात आकाश' (सन 1964) में लिखे हुए यात्रा-वृत्तांत हैं। इन यात्रा वर्णन में काव्यात्मकता दिखाई देती है। कवि काणेकर निसर्गप्रेमी थे, इसकारण उन्होंने प्रदेश विशेषता

तथा वहाँ की निसर्ग विशेषता को लेकर यात्रा-वृत्तांत किया है। युरोप, रशिया, कोलंबो, हाँगकाँग, अमेरिका तथा उत्तर भारत आदि स्थलों का वर्णन आपनी यात्रा-वृत्तांत में काणेकरजी ने किया है।

काका कालेलकर ने 'लोकमाता अर्थात् भारतवर्षातील नद्यांचे वर्णन' (सन 1938), 'हिमालयातील प्रवास' (1939), 'आमच्या देशाचे दर्शन' (सन 1943) 'भक्त-कुसुमे' (सन 1944) 'लाटांचे तांडव' (सन 1945), 'जीवनलीला' (सन 1958) 'भारतदर्शन (खंड 1 ते 4)' (सन 1961 से 66 तक) यह ग्रंथ यात्रा-वृत्तांत के रूप में प्रकाशित हुए हैं। कालेलकरजी का यात्रा-वृत्तांत पूर्णतः राष्ट्रवाद से प्रेरित है। इस यात्रा-वर्णन में भारत देश की संस्कृति का दर्शन है। वह कहते हैं कि, मेरी भारत यात्रा के वर्णन यह केवल साहित्य-विलास न रहते हुए वह भारत भक्त और पूजा का एक प्रकार है। इनके यात्रा-वृत्तांत मराठी साहित्य को समृद्ध करते हैं। प्रा. रा. भि. जोशी एक तटस्थ वृत्ती के, संयत और प्रतिभावान यात्रा-लेखन करनेवाले रसिक कलावंत हैं। इन्होंने 'वाटचाल' (सन 1953), 'मजल-दरमजल' (सन 1961) यह यात्रा-वृत्तांत लिखे। वाटचाल में ब्रम्हकुंड घाट, कुशावर्त घाट, हरिद्वार, हषिकेश,

लाहोर, दिल्ली, मालवा, वन्हाड, गोवा, कारवार आदि स्थलों का वर्णन किया है। वाराणसी के महत्व को बताते हुए वह कहते हैं कि, "वाराणसी में जन्म और मरण मिलना पुण्यवान होता है। वाराणसी में जन्म के लिए आना अपने हाथों में नहीं रहता, परंतु मरण यहाँ पर हो इसलिए बहुत सारे बूढ़े स्त्री-पुरुष यहाँ आकर रहते हैं।" (रा.भि. जोशी, वारणास्यां जननमरणम् पृ.48)

गंगाधर गाडगील मराठी साहित्य के महत्वपूर्ण समीक्षक हैं। इन्होंने 'गोपुरांच्या प्रदेशात' (सन 1952) और 'साता समुद्रापलीकडे' (सन 1954) यह दो यात्रा-वृत्तांत पर ग्रंथ लिखे। साता समुद्रापलीकडे इस यात्रा वृत्तांत में गाडगील ने युरोप, अमेरिका और आशिया के राष्ट्रों पर आधारित किताब है।

महाराष्ट्र के लोकप्रिय साहित्यकार पु.ल. देशपांडे का नाम सर्वपरि हैं। वह एक प्रसिद्ध लेखक, कथाकार, नाटककार, अभिनेता, दिग्दर्शक के रूप में प्रसिद्ध हैं। इन्होंने 'अपूर्वाई' (सन 1960) और 'पूर्वरंग' (सन 1963) यह प्रवास-वृत्तांत पर किताबें लिखीं। स.गं. मालशे, पु.ल. के बारे में कहते हैं कि, "पु.ल. देशपांडे के कोणसे ही यात्रा-वर्णन पढ़ते समय व्यंग्यकार के रूप में जो उनकी विशेषता है, वह सभी इनमें अविष्कृत रूप में दिखाई देती है। जीवन की संगति-विसंगति की खोज करते-करते सहजरूप में उसमें अपने अनुभव की नाट्यपूर्ण रूप से प्रस्तुति वह करते हैं।" (भूमिका, केल्याने देशाटन)

यात्रा-वृत्तांत में मराठी साहित्य में महत्वपूर्ण नाम है प्रभाकर पाध्ये। इन्होंने 'नवे जग नवी क्षितिजे' (सन 1954), 'अगस्तीच्या अंगणात' (सन 1957), 'उडता गालिचा' (सन 1950) 'तोकोनोमा' (सन 1961), 'हिरवी उन्हे' (सन 1964) आदि प्रवास-वृत्तांत पर किताबें लिखीं। 'तोकोनोमा' इस यात्रा-वृत्तांत में 'अतामी' इस शिर्षक से यहाँ के सौंदर्य का चित्रण उन्होंने किया है। वह कहते हैं कि, "अतामी यह हनीमून का ठिकाण है। प्रकृति ने ही अतामी की व्यवस्था उसप्रकार कियी है। अपनी ओर से कुछ कम न पड़ जाए ऐसी व्यवस्था उन्होंने कियी है। जपान के रिकव्हरा नामक प्रसिद्ध भाग में अतिसुंदर जगह पर अतामी बौठी है।" (प्रभाकर पाध्ये, अतामी पृ.111)

इनके साथ लोकशाहीर आणाभाऊ साठे का 'रशियाची वारी', चि.वि. जोशी का प्रवास टिपण (सन 1943), कमला

फडके का 'त्रिवेंद्रमची सफर', 'उटकमंडची यात्रा', गो.नी. दांडेकर ने 'नर्मदेच्या तटाकी' व 'दक्षिणवारा' ; वसुदेव बळवंत कर्णीक इनका, 'विषुवृत्ताच्या पलीकडे' और 'लोकशाहीचे माहेर' यह यात्रा वृत्तांत हैं। शशिकांत पुर्नवसनका 'ऊब और गारठा', जयवंत दळीवा का 'लोक व लौकीक', अरविंद गोखले का 'अमेरिकेस पाहावे जावून', डॉ. वसंत अवसरे का 'विच्छुच्या प्रदेशातुन' तथा 'लाल नदी निळे डोंगर', रमेश मंत्री का 'थंडाची दिवस' 'नवरंग', प्रा. बाळ गाडगीळ इनका 'सिगरेट आणि वसंत ऋतु' आदि यात्रा-वृत्तांत इस काल लिखे गए हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि, यात्रा-वृत्तांत को देखने के बाद यात्रा-वर्णन एक साहित्य का भाग है।

2. पंचम युग (सन 1966 से 1980 तक)

इस काल में मराठी साहित्य में यात्रा-वृत्तांत लिखे गए साहित्यकार जहाँ पर भ्रमण करता हैं वहाँ कि परिकस्थतियों का चित्रण अपने यात्रा वृत्तांत में करता है। इस कार्यकाल में पु.ल. देशपांडे सबसे महत्वपूर्ण यात्रा-वृत्तांत करनेवाले साहित्यकार हैं। इन्होंने 'जावे त्यांच्या देशा' व 'वंगचित्रे' यह दो यात्रा-वृत्तांत लिखे, जिनका साहित्यिक क्षेत्र में स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। वंगचित्र में भारतीय यात्रा पर आधारित यात्रा-वर्णन है। 'जावे त्यांच्या देशा' यह युरोप और अमेरिका इन राष्ट्रों में किए यात्राओं पर आधारित है।

रा.भी.जोशी द्वारा 'उथव' (सन 1978) यह यात्रा-वृत्तांत है। इनमें कन्याकुमारी, कश्मीर से लेकर गोवा-मुंबई तक की 'घटनाओं का विवरण है। माधव गडकरी ने 'असा हा महाराष्ट्र-भाग-1' (सन 1965), 'असा हा महाराष्ट्र भाग-2' (सन 1966), 'मुंबई ते मॉस्को व्हाया लंडन' (सन 1969), 'सोनार बंगला' (सन 1972), इसा हा 'गोमंतक' (सन 1974), 'एक झलक पूर्वोची' (सन 1979) आदि यात्रा-वर्णन पर ग्रंथ लिखे। इन में से इन्होंने जो यात्राएँ कियी हैं, वह पत्रकार के रूप में कियी हैं। महाराष्ट्र दर्शन में उन्होंने महाराष्ट्र की परंपराएँ, वैभवपूर्ण भूतकाल, नई उन्मेष और कर्तृत्व का स्मरण कर देनेवाला यात्रा-वृत्तांत है।

प्रा.वसंत बापट द्वारा 'बारा गावचं पाणी' (सन 1966) में लिखित यात्रा वर्णन भारतभूमीपर आधारित है। इंदुमती शेवडे ने, 'इथे साहेबाचिये नगरी' (सन 1966) इस यात्रा-वर्णन में इंग्लंड, फ्रान्स, इटली, रोम यहाँ की यात्रा का वर्णन किया है। दिलीप चित्रे द्वारा लिखित 'शीबा रानीच्या शोधात' (सन 1971) यह यात्रा-वृत्तांत है। यह यात्रा-वर्णन अफ्रिका में के

इथोपिया इस राष्ट्र पर आधारित है। यात्रा-वर्णन और आत्मचरित्र का 'घनिष्ठ संबंध प्रस्थापित करनेवाला यह यात्रा-वर्णन है। रविंद्र केलकर ने 'जपान जसा दिसला' (सन1970) यह यात्रा वृत्तांत लिखा। प्रभाकर तामणे का 'हिमफुलांच्या देशात' रविंद्र पिंगे का 'आनंदाच्या दाही दिशा', चक्रवाक देशी का 'प्रकाश गोळे' आदि यात्रा वृत्तांत इस कार्यकाल में लिखे गए हैं।

3.षष्ठम युग (सन 1980 ते आजतक)

सन 1980 के बाद यात्रा ने विविध सुविधा के कारण यात्रा-लेखक सहज देश-प्रदेश जाकर यात्रा-वर्णन करने लगे। इस काल में विविध यात्रा वृत्तांत ग्रंथ मराठी में लिखे गए कुछ ग्रंथों का परिचय निम्ननुसार दिया गया है।

'पृथ्वीच्या पाठीवर' यह यात्रा-वर्णन शंकरराव पोतदार ने सन 1983 में लिखा। इसमें उन्होंने अमेरिका कस्थित मोटार जीवन, न्यूयॉर्क का ब्राक्स, प्राणिसंग्रहालय, कॅनडा की राजधानी ओटावा, कॅलंगरी शहर तथा इंग्लंड, जर्मनी, स्पेन आदी राष्ट्रों का यात्रा-वर्णन किया है। ओटावा शहर के बारे में लेख लिखते हैं कि, "ओटावा शहर विस्तृत होने के बावजूद भी यातायात तीव्र है तथा शहर के मध्य से जानेवाला क्वीन्स एक्सप्रेस है। शहर के अनेक आकर्षणों से यहाँ धूपकाल में भीड़ होती है। आईसस्केटिंग और स्नोमोबिलिंग खेल में ओटावा की ख्याती है।" (पृथ्वीच्या पाठीवर, शंकरराव पोतदार, पृ.37)

'सफर आपल्या 'घराजवळचा' यह यात्रा-वृत्तांत शशिकांत कोठेकर द्वारा लिखित सन 2003 में प्रकाशित है। इसमें लेखक ने ठाणे, डोंबिवली, इन महानगरों के सौंदर्य का चित्रण किया है। सफर थायलंडची यह यात्रा वृत्तांत सौ. शोभा साळोखे ने लिखा हुआ ग्रंथ है। इसमें थायलंड का इतिहास, थायलंड की शहरे, थायलंड की सांस्कृतिक परंपरा, कला, सांस्कृतिक, रितिरिवाज, आदि विषय संबंधी वर्णन इस ग्रंथ में हुआ है। थायलंड की कला का वर्णन करते समय वह लिखती हैं कि, "थायी कला में चांदी की वस्तु, चिनी मिट्टी की वस्तु, लाखों के द्वारा काम किए हुए वस्तुएँ, लकड़ी का काम, छाता निर्माण, थायी सिल्क आदि महत्वपूर्ण वस्तुओं का इनमें समावेश है।" (सफर थायलंडची, सौ. शोभा साळोखे पृ.100)

'पाहिलेले देश नेटलेली माणसं' यह मंगला नारळीकर द्वारा रचित यात्रा-वृत्तांत है। यह सन 2010 में प्रकाशित ग्रंथ है। प्रस्तुत ग्रंथ में जपान, ब्राझिल, झिम्बाब्वे,

ऑस्ट्रेलिया, न्यूझीलंड, पाकिस्तान, चीन, श्रीलंका, चिली आदि राष्ट्रों के संस्कृति, कला, तथा परिवेश का वर्णन किया गया है। लेखिका कहती हैं कि, "यह पूर्ण यात्रा करते समय मेरा अनुभव विस्तारित हो गया। किसी एक राष्ट्र के समाज की जानकारी लेते समय वहाँ इतिहास की जानकारी होना आवश्यक है। इसलिए उन राष्ट्रों का इतिहास मैंने पढ़ा। इस प्रकार राष्ट्रों के वर्तमान और भूगोल इसमें से इतिहास का अभ्यास करने में रोचकता होती है इसका अनुभव मैंने लिया।" (पाहिलेले देश नेटलेली माणसं, मंगला नारळीकर, पृ.07)

शाम शिंदे द्वारा पुणे से युरोप यह यात्रा-वृत्तांत सन 2011 प्रकाशित यात्रा-ग्रंथ है। इस ग्रंथ में पुना, मुंबई, दोहा, लंडन, पॅरिस, ल्यूसर्न, स्विट्ज़र्लैंड, ऑस्ट्रीया, व्हेनिस, पिसा, फ्लोरेंस, रोम आदि ठिकाणों का वर्णन उन्होंने किया है।

इसप्रकार इस युग में अनेक लेखकों ने यात्राएँ कियीं उनके ग्रंथों के नाम इस प्रकार हैं रवि वाळेकर के द्वारा 'कंबोडायण', शिरीष कणेकर के द्वारा 'डॉलरच्या देशा', मीना प्रभू के द्वारा 'दक्षिण रंग' और 'उत्तरोत्तर', डॉ. मिलिंद न. जोशी के द्वारा 'प्रवास रंग', समीर झांटे के द्वारा 'बुध्दायन आणि इतर प्रवास' लुंबिनी, बोगगया, सारनाथ, कुशीनगर, इस ठिकाण का प्रवास करके बुद्धा के बारे में नगरों की जानकारी बताई है। ज्योती महंत के द्वारा 'सफर (सन2015)', डॉ. मंगला जोशी के द्वारा 'हिमालयाचा प्रवास', रेखा राव के द्वारा 'माझा प्रवास माझे अनुभव', स्नेहा विहंग के द्वारा 'नर्मदायन', सागर कुलकर्णी के द्वारा 'टेहळ्या', सदानंद येरवडेकर के द्वारा 'नर्मदा तिरी मी सदांमस्त', निमीन तेंडुलकर के द्वारा 'प्रवास महाराजा सोबतचा', डॉ. मोहिनी पानसे के द्वारा 'टूर द वूल्ड डॉट कॉम', ज्योती राने के द्वारा 'दुनिया रंगबिरंगी', सुहास मंत्री के द्वारा 'ध्रुवीस भ्रमण गाथा', जयप्रकाश 'घुमटकर के द्वारा 'गोल' घुमट', अनंत लाभसेटवार के द्वारा 'विश्व संचारी', पुष्पा जोशी के द्वारा 'कंबोडिया ते कॅनडा', पंकज 'घाटे के द्वारा 'सफर छंद', अनिल नेने के द्वारा 'यावे त्याच्या देशा', चंद्रसेन टिळेकर के द्वारा 'परिवर्तनाच्या वाटेवरील काटे' नंदिनी म. देशपांडे के द्वारा 'मला भावलेला युरोप भाग 1 ते 5(सन2018)', प्रकाश पिटकर के द्वारा 'मसुर पाचुचा सुंदरगाव', डॉ. अविनाश वौद्य के द्वारा 'निसर्गरम्य तळकोकणचा प्रवास (सन2018)', नंदिनी म. देशपांडे के द्वारा 'एक अविस्मरणीय सागरी सफर',

अनिल शर्मा के द्वारा 'दुरुन डोंगर साजरे' आदि यात्रीयों ने भ्रमण कर यात्रा-वर्णन पर ग्रंथों का निर्माण किया है।

निष्कर्ष

मराठी साहित्य में यात्रा-वृत्तांत का इतिहास समृद्ध और विविधतापूर्ण है। सन 1940 से 2020 तक इस विधा ने अनेक शैलीगत व विषयगत रूपांतरे अनुभवली। प्रारंभिक दौर में यात्रा-वर्णन मुख्यतः सांस्कृतिक, धार्मिक, व ऐतिहासिक स्थलों के चित्रण तक सीमित था, परंतु समय के साथ इसमें व्यक्तिगत अनुभूति, व्यंग्य, आत्मचरित्र, व सामाजिक समीक्षा का समावेश हुआ। चौथे और पंचम युग में पु. ल. देशपांडे, काका कालेलकर, गंगाधर गाडगील, माधव गडकरी आदि ने मराठी यात्रा-वृत्तांत को कलात्मकता व गहन सांस्कृतिक दृष्टिकोण प्रदान किया। षष्ठम युग में वैश्वीकरण, पर्यटन और तंत्रज्ञानामुळे यात्रा-वर्णन अधिक व्यापक, बहुआयामी व आधुनिक दृष्टिकोणातून समृद्ध झाले।

यात्रा-वृत्तांत के माध्यम से लेखक न केवल स्थलों का वर्णन करता है, बल्कि समाज, संस्कृति, परंपरा और मानवी मूल्यों के प्रतिबिंब प्रस्तुत करता है। इस प्रकार यात्रा-वृत्तांत मराठी साहित्य में मानव की जिज्ञासा, साहसवृत्ति और जगाची ओळख वाढविणारा महत्वाचा साहित्यप्रकार ठरला आहे।

संदर्भ-ग्रंथ सूची:-

1. हिंदी कथेत्तर साहित्य- सं. ठकार निशिकांत
2. पाहिलेले देश भेटलेली माणसे - मंगला नारळीकर
3. सफर थायलँडची - सौ. शोभा साळोखे
4. माझा प्रवास - विष्णुपंत गोडसे
5. पृथ्वीच्या पाठवर - शंकरराव पोतदार
6. भारतीय कहानीकार- गंगाधर गाडगील- सीधी रेखा

